

न्यायालय कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, चित्तौड़गढ़ जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)**पीठासीन अधिकारी - तारा चन्द मीणा (आई.ए.एस.)**

प्रकरण संख्या 107/2021 (GCMS 2021/175)	दायर दिनांक 05.04.2021	निर्णय दिनांक 22.09.2021
----------------------------------------------	---------------------------	-----------------------------

अनवान

एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड, मुख्य व्यवसायिक कार्यालय 321, एस एम लोढा कॉम्प्लेक्स, शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.)

प्रार्थी**बनाम**

1. कैलाश चंद पूर्बिया पुत्र बालु राम पूर्बिया जाति पूर्बिया निवासी 22, पूर्बिया बस्ती, रेण का खेडा, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़।
2. श्रीमती मोहनी बाई पत्नि बालु पूर्बिया जाति पूर्बिया निवासी 22, पूर्बिया बस्ती, रेण का खेडा, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़।
3. भैरु लाल पूर्बिया पुत्र भूरा लाल पूर्बिया जाति पूर्बिया निवासी 62, पूर्बिया का मौहल्ला, भट्टों का बामणिया, चौका खेडा, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़।
4. माधु लाल पूर्बिया पुत्र शंकर लाल पूर्बिया जाति पूर्बिया निवासी 43, रेण का खेडा, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़।

अप्रार्थीगण

उपरिस्थिति :- आरएस चुण्डायत
एक तरफा

अधिवक्ता प्रार्थी
अप्रार्थीगण

**प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा 14 वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण,
पुनर्गठन ओर प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002**

--: निर्णय :-

प्रकरण का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि प्रार्थी वित्तीय संस्था द्वारा प्रार्थना-पत्र अन्तर्गत धारा 14 वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण, पुनर्गठन ओर प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत अप्रार्थीगण के विरुद्ध प्रस्तुत कर निवेदन किया कि प्रार्थी वित्तीय संस्था द्वारा अप्रार्थीगण को राशि रुपये 4,00,000/- अक्षरे चार लाख पचास हजार रुपये का ऋण स्वीकृत कर वितरित किया। अप्रार्थीगण ने ऋण व उसके मय ब्याज के पुनर्भुगतान सिक्चोरिटी के रूप में अपनी



(तारा चन्द मीणा)
कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट
चित्तौड़गढ़

अचल सम्पत्ति को प्रार्थी वित्तीय संस्था के पास रहन किया और उस पर निर्मित मकान को भी प्रार्थी वित्तीय संस्था के पक्ष में गिरवीकृत किया। अप्रार्थीगण नियमित रूप से प्रार्थी का उक्त ऋण का भुगतान नहीं कर सकें और भुगतान में व्यतिक्रम व अतिदेय होने पर दिनांक 21.06.2019 अप्रार्थीगण के खाते को एन.पी.ए. घोषित कर दिया है। अप्रार्थीगण के खाते में बकाया रूपये 4,90,950/- अक्षरे चार लाख नब्बे हजार नौ सौ पचास रूपये मात्र दिनांक 22.02.2020 तक व आगे का ब्याज व खर्चे आदि सहित राशि का भुगतान करने के लिए अप्रार्थी जिम्मेदार है। प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड ने उक्त एक्ट की धारा 13(2) के अन्तर्गत दिनांक 27.02.2020 को नोटिस भी अप्रार्थीगण को प्रेषित किया और जिसकी प्राप्ति के बाद भी उन्हे देय राशि का भुगतान प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड को नहीं दिया। अप्रार्थीगण ने देय ऋण राशि का भुगतान बावजूद मांग के भी प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड को नहीं किया है, उक्त एक्ट के प्रावधानों के अनुसार प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड उक्त वर्णित सिक्योरिटी रहनशुदा सम्पत्ति का कब्जा प्राप्त करने व विक्रय कर उक्त शेष देय राशि को वसूल करने का अधिकारी है एवं निवेदन किया कि उक्त सम्पत्ति जिसका विवरण प्रार्थना पत्र की घरण संख्या 2 में दिया गया है का कब्जा अप्रार्थी से प्राप्त कर प्रार्थी कम्पनी को या उसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति को दिलाने की कृपा करावें।

प्रकरण दर्ज रजिस्टर किया जाकर विपक्षीगण को रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से सूचना पत्र प्रेषित किये गये। अप्रार्थीगण के बाजवूद सूचना के हाजिर नहीं आने से दिनांक 22.09.2021 को अप्रार्थीगण के विरुद्ध कार्यवाही एक तरफा अमल में लाई गई।

दिनांक 22.09.2021 को हाजिर अधिवक्ता प्रार्थी ने बहस पत्रावली का निवेदन किया गया। इस पर हाजिर अधिवक्ता प्रार्थी द्वारा की गई बहस पत्रावली को एक तरफा सुना गया। विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी ने प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों को दोहराया एवं बताया कि प्रार्थी वित्तीय संस्था एक निगमित निकाय है, जो अपनी शाखाओं के माध्यम से बैंकिंग व्यवसाय करती है। अप्रार्थीगण ने ऋण व उसके मय ब्याज के पुनर्भुगतान सिक्योरिटी के रूप में अपनी अचल सम्पत्ति को प्रार्थी वित्तीय संस्था के पास रहन किया और उस पर निर्मित मकान को भी प्रार्थी वित्तीय संस्था के पक्ष में गिरवीकृत किया। अप्रार्थीगण नियमित रूप से प्रार्थी का उक्त ऋण का भुगतान नहीं कर सकें और भुगतान में व्यतिक्रम व अतिदेय होने पर अप्रार्थीगण के खाते को एन.पी.ए. घोषित कर दिया है। प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड ने उक्त एक्ट की धारा 13(2) के अन्तर्गत दिनांक 27.02.2020 को नोटिस भी अप्रार्थीगण को प्रेषित किया और जिसकी प्राप्ति के बाद भी उन्हे देय राशि का भुगतान प्रार्थी एस आर जी हाउसिंग फाईनेंस लिमिटेड को नहीं दिया। प्रार्थी वित्तीय संस्था की शाखा से अप्रार्थीगण को उक्त ऋण



55
(तारा चन्द्र मीणा)
कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट
चित्तौड़गढ़

सुविधा उपलब्ध कराई गयी जिसके तहत रहन की गई जायदाद का विवरण निम्न है:-

श्रीमती मोहनी बाई पत्नि बालु पूर्बिया जाति पूर्बिया की सम्पत्ति जो कि पट्टा संख्या 87, बुक संख्या 152, ग्राम रेण का खेडा, तहसील कपासन जिला चित्तौड़गढ़ पर स्थित है। जिसमें भूमि, भवन एवं ढांचा आदि जो सभी सम्पत्ति के अभिन्न अंग है जिसकी माप 1007 वर्ग फीट है। चारों दिशाएं :-

पूर्व :-	शोभा लाल /किशन पूर्बिया का मकान	पश्चिम :-	शंकरलाल/गेहरू पूर्बिया का मकान
उत्तर :-	मगनीराम/गमेर पूर्बिया का बाड़ा	दक्षिण :-	आम रास्ता

उक्त सम्पत्ति प्रार्थी वित्तीय संस्था के पक्ष में रहन रख कर ऋण स्वीकृत किया गया था। अप्रार्थीगण द्वारा प्रार्थी वित्तीय संस्था को ऋण व ब्याज की राशि नियमित भुगतान नहीं करने पर, प्रार्थी वित्तीय संस्था द्वारा अप्रार्थीगण को नोटिस दिये जाने के उपरान्त भी राशि का भुगतान नहीं किया गया है जिससे अप्रार्थीगण के जिम्मे दिनांक 22.02.2020 तक राशि रूपये 4,90,950/- रूपये तथा ब्याज व अन्य चार्जेज देय निकलते है। उक्त राशि का भुगतान नहीं करने से अप्रार्थीगण स्वयं जिम्मेदार है। प्रार्थी वित्तीय संस्था जो कि नियमानुसार अपना व्यवसाय करती है। अतः अप्रार्थीगण द्वारा बतौर जमानत प्रार्थी वित्तीय संस्था के पक्ष में रहन रखी गयी सम्पत्ति का कब्जा जरिये पुलिस इमदाद प्रार्थी वित्तीय संस्था को दिलाया जावे।

हमने पत्रावली का आद्यौपांत अवलोकन किया। विद्वान अधिवक्ता प्रार्थी द्वारा की गई बहस पत्रावली पर चिंतन-मनन किया। हमने वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण, पुनर्गठन ओर प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 का अवलोकन किया। अधिनियम की धारा 14 में प्रावधित किया गया है कि :-

14. Chief Metropolitan Magistrate or District Magistrate to assist secured creditor in taking possession of secured asset.

- (1) Where the possession of any secured assets is required to be taken by the secured creditor or if any of the secured assets is required to be sold or transferred by the secured creditor under the provisions of this Act, the secured creditor may, for the purpose of taking possession or control of any such secured assets, request, in writing, the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate within whose jurisdiction any such secured asset or other documents relating thereto may be situated or found, to take possession thereof, and the Chief Metropolitan Magistrate or as the case may be, the District Magistrate shall, on such request being made to him --
- take possession of such asset and documents relating thereto; and
 - forward such asset and documents to the secured creditor:

[Provided that any application by the secured creditor shall be accompanied by an affidavit duly affirmed by the authorised officer of the secured creditor, declaring that --

- the aggregate amount of financial assistance granted and the total claim of the Bank as on the date of filing the application;



(तारा चन्द्र मीणा)
कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट
चित्तौड़गढ़

- (ii) the borrower has created security interest over various properties and that the Bank or Financial Institution is holding a valid and subsisting security interest over such properties and the claim of the Bank or Financial Institution is within the limitation period;
- (iii) the borrower has created security interest over various properties giving the details of properties referred to in sub-clause (ii) above;
- (iv) the borrower has committed default in repayment of the financial assistance granted aggregating the specified amount;
- (v) consequent upon such default in repayment of the financial assistance the account of the borrower has been classified as a non-performing asset;
- (vi) affirming that the period of sixty days notice as required by the provisions of sub-section (2) of section 13, demanding payment of the defaulted financial assistance has been served on the borrower;
- (vii) the objection or representation in reply to the notice received from the borrower has been considered by the secured creditor and reasons for non-acceptance of such objection or representation had been communicated to the borrower;
- (viii) the borrower has not made any repayment of the financial assistance in spite of the above notice and the Authorised Officer is, therefore, entitled to take possession of the secured assets under the provisions of sub-section (4) of section 13 read with section 14 of the principal Act;
- (ix) that the provisions of this Act and the rules made thereunder had been complied with:

[Provided further that on receipt of the affidavit from the Authorised Officer, the District Magistrate or the Chief Metropolitan Magistrate, as the case may be, shall after satisfying the contents of the affidavit pass suitable orders for the purpose of taking possession of the secured assets [within a period of thirty days from the date of application:]

[Provided also that if no order is passed by the Chief Metropolitan Magistrate or District Magistrate within the said period of thirty days for reasons beyond his control, he may, after recording reasons in writing for the same, pass the order within such further period but not exceeding in aggregate sixty days.]

[Provided also that the requirement of filing affidavit stated in the first proviso shall not apply to proceeding pending before any District Magistrate or the Chief Metropolitan Magistrate, as the case may be, on the date of commencement of this Act.]

- (1A) The District Magistrate or the Chief Metropolitan Magistrate may authorise any officer subordinate to him,--
 - (i) to take possession of such assets and documents relating thereto; and
 - (ii) to forward such assets and documents to the secured creditor.]
- (2) For the purpose of securing compliance with the provisions of sub-section (1), the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate may take or cause to be taken such steps and use, or cause to be used, such force, as may, in his opinion, be necessary.
- (3) No act of the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate [any officer authorised by the Chief Metropolitan Magistrate or District Magistrate] done in pursuance of this section shall be called in question in any court or before any authority.

उक्तानुसार अधिनियम की धारा 14 में वित्तीय संस्था को प्रत्याभूत आस्तियों को प्रवर्तित किये जाने के संबंध में उपाबंध प्रावधित किये गये है। इस संबंध में अधिनियम की धारा 14(1)(b)(vi)



53
(तारा चन्द्र मीणा)
कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट
जितौड़गढ़

